कनक धारा स्तोत्र पाठ, कथा, महत्व, लाभ और सही पाठ विधि kanakdhara strot

श्री कनकधारा स्तोत्र — 25 श्लोक सरल हिंदी अर्थ सहित

मंगलाचरण

वन्दे वन्दारु मन्दारमिन्दिरानन्दकन्दलम् ।
अमन्दानन्दसन्दोह बन्धुरं सिन्धुराननम् ॥

सरल अर्थ:
मैं उन भगवान गणेश को प्रणाम करता हूँ जो भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाले कल्पवृक्ष के समान हैं और जिनका स्वरूप आनंद से परिपूर्ण तथा सुंदर है। किसी भी शुभ कार्य की शुरुआत भगवान गणेश के स्मरण से करने की परंपरा इसी भावना को दर्शाती है।

श्लोक 1

अङ्गं हरेः पुलकभूषणमाश्रयन्ती
भृङ्गाङ्गनेव मुकुलाभरणं तमालम् ।
अङ्गीकृताखिलविभूतिरपाङ्गलीला
माङ्गल्यदास्तु मम मङ्गलदेवतायाः ॥ १ ॥

सरल अर्थ:
जिस प्रकार भौंरा फूलों से सजे तमाल वृक्ष पर मंडराता है, उसी प्रकार माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु के दिव्य शरीर पर सुशोभित रहती हैं। वे समस्त ऐश्वर्य और संपत्ति की देवी हैं। उनकी कृपा भरी एक दृष्टि मेरे जीवन में भी **मंगल, सुख और समृद्धि** लेकर आए।

श्लोक 2

मुग्धा मुहुर्विदधती वदने मुरारेः
प्रेमत्रपाप्रणिहितानि गतागतानि ।
माला दृशोर्मधुकरीव महोत्पले या
सा मे श्रियं दिशतु सागरसम्भवायाः ॥ २ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी की दृष्टि प्रेम और लज्जा से बार-बार भगवान विष्णु के मुख की ओर जाती और फिर लौट आती है। उनकी आंखें ऐसे लगती हैं जैसे कोई भौंरा सुंदर कमल के चारों ओर मंडरा रहा हो। समुद्र से उत्पन्न हुई वही माँ लक्ष्मी मुझे भी **श्री, सुख और समृद्धि** प्रदान करें।

श्लोक 3

विश्वामरेन्द्रपदविभ्रमदानदक्ष-
मानन्दहेतुरधिकं मुरविद्विषोऽपि ।
ईषन्निषीदतु मयि क्षणमीक्षणार्थ-
मिन्दीवरोदरसहोदरमिन्दिरायाः ॥ ३ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी की कृपादृष्टि इतनी शक्तिशाली है कि वह देवताओं के राजा इंद्र जैसा वैभव भी प्रदान कर सकती है और भगवान विष्णु को भी आनंद देती है। उनके सुंदर नीलकमल के समान नेत्रों की कृपा कुछ क्षण के लिए मुझ पर भी पड़े और मेरे जीवन में **सौभाग्य तथा समृद्धि** आए।

श्लोक 4

आमीलिताक्षमधिगम्य मुदा मुकुन्द-
मानन्दकन्दमनिमेषमनङ्गतन्त्रम् ।
आकेकरस्थितकनीनिकपक्ष्मनेत्रं
भूत्यै भवेन्मम भुजङ्गशयाङ्गनायाः ॥ ४ ॥

सरल अर्थ:
जब माँ लक्ष्मी अपने प्रिय भगवान विष्णु को देखती हैं, तो उनके नेत्र प्रेम और आनंद से भर जाते हैं। उनकी थोड़ी झुकी हुई, सुंदर और करुणामयी दृष्टि मेरे लिए भी **धन, ऐश्वर्य और कल्याण** का कारण बने।

श्लोक 5

बाह्वन्तरे मधुजितः श्रितकौस्तुभे या
हारावलीव हरिनीलमयी विभाति ।

कामप्रदा भगवतोऽपि कटाक्षमाला
कल्याणमावहतु मे कमलालयायाः ॥ ५ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु के वक्षस्थल पर कौस्तुभ मणि के पास ऐसी दिखाई देती हैं जैसे नीले रंग की सुंदर माला। उनकी कृपामयी दृष्टि भगवान विष्णु की भी इच्छाएँ पूर्ण करने वाली है। वही कमल पर निवास करने वाली देवी मेरे जीवन में **कल्याण और शुभता** लेकर आएँ।

श्लोक 6

कालाम्बुदालिललितोरसि कैटभारे-
र्धाराधरे स्फुरति या तटिदङ्गनेव ।
मातुस्समस्तजगतां महनीयमूर्तिः
भद्राणि मे दिशतु भार्गवनन्दनायाः ॥ ६ ॥

सरल अर्थ:
जैसे काले बादल के बीच बिजली चमकती है, उसी तरह माँ लक्ष्मी भगवान विष्णु के श्याम शरीर पर सुशोभित होती हैं। वे पूरे संसार की माता और अत्यंत पूजनीय हैं। भगवान भृगु की पुत्री माँ लक्ष्मी मुझे **सभी प्रकार का मंगल और कल्याण** प्रदान करें।

श्लोक 7

प्राप्तं पदं प्रथमतः खलु यत्प्रभावा-
न्माङ्गल्यभाजि मधुमाथिनि मन्मथेन ।
मय्यापतेत्तदिह मन्थरमीक्षणार्धं
मन्दालसं च मकरालयकन्यकायाः ॥ ७ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी की कृपा से कामदेव को भी भगवान विष्णु जैसे परम मंगलमय स्वरूप की प्राप्ति हुई। समुद्र की पुत्री लक्ष्मी की वही शांत, कोमल और करुणामयी आधी दृष्टि मुझ पर भी पड़े और मेरे जीवन में **सौभाग्य तथा समृद्धि** आए।

श्लोक 8

दद्याद्दयानुपवनो द्रविणाम्बुधारा-
मस्मिन्नकिञ्चनविहङ्गशिशौ विषण्णे ।
दुष्कर्मघर्ममपनीय चिराय दूरं
नारायणप्रणयिनीनयनाम्बुवाहः ॥ ८ ॥

सरल अर्थ:
हे नारायण की प्रिय माँ लक्ष्मी! मैं निर्धन और असहाय व्यक्ति के समान आपकी कृपा की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। आपकी करुणा की वर्षा

मेरे ऊपर ऐसी हो जैसे बादल वर्षा करता है। मेरी परेशानियों और पुराने बुरे कर्मों से उत्पन्न कष्ट दूर हों और मेरे जीवन में **सुख-संपत्ति का प्रवाह** हो।

श्लोक 9

इष्टाविशिष्टमतयोऽपि यया दयार्द्र-
दृष्ट्या त्रिविष्टपपदं सुलभं लभन्ते ।
दृष्टिः प्रहृष्टकमलोदरदीप्तिरिष्टां
पुष्टिं कृषीष्ट मम पुष्करविष्टरायाः ॥ ९ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी की दयालु दृष्टि से साधारण व्यक्ति भी उच्च पद और सम्मान प्राप्त कर सकता है। उनके कमल के भीतर की चमक जैसी सुंदर दृष्टि मेरे जीवन में भी **पोषण, समृद्धि, सुख और उन्नति** लेकर आए।

श्लोक 10

गीर्देवतेति गरुडध्वजसुन्दरीति
शाकम्भरीति शशिशेखरवल्लभेति ।
सृष्टिस्थितिप्रलयकेलिषु संस्थितायै
तस्यै नमस्त्रिभुवनैकगुरोस्तरुण्यै ॥ १० ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी को विभिन्न रूपों और नामों से जाना जाता है। वे ज्ञान की देवी, भगवान विष्णु की प्रिय, शाकम्भरी और जगत की पालन करने वाली शक्ति के रूप में पूजित हैं। सृष्टि, पालन और परिवर्तन की दिव्य व्यवस्था में उनकी शक्ति विद्यमान है। ऐसी जगत-माता को मेरा प्रणाम।

श्लोक 11

श्रुत्यै नमोऽस्तु शुभकर्मफलप्रसूत्यै
रत्यै नमोऽस्तु रमणीयगुणार्णवायै ।
शक्त्यै नमोऽस्तु शतपत्रनिकेतनायै
पुष्ट्यै नमोऽस्तु पुरुषोत्तमवल्लभायै ॥ ११ ॥

सरल अर्थ:
माँ लक्ष्मी को ज्ञान और शुभ कर्मों के फल देने वाली शक्ति के रूप में प्रणाम है। वे सुंदर गुणों का समुद्र हैं, शक्ति और पोषण की देवी हैं तथा भगवान विष्णु की प्रिय हैं। मैं ऐसी माँ लक्ष्मी को बार-बार प्रणाम करता हूँ।

श्लोक 12

नमोऽस्तु नालीकनिभाननायै
नमोऽस्तु दुग्धोदधिजन्मभूम्यै ।
नमोऽस्तु सोमामृतसोदरायै
नमोऽस्तु नारायणवल्लभायै ॥ १२ ॥

सरल अर्थ:
कमल के समान सुंदर मुख वाली माँ लक्ष्मी को प्रणाम है। वे क्षीरसागर से प्रकट हुईं और अमृत के समान दिव्य स्वरूप वाली हैं। भगवान नारायण की प्रिय पत्नी माँ लक्ष्मी को बार-बार प्रणाम है।

25-श्लोक वाले संस्करण के अतिरिक्त श्लोक

श्लोक 13

नमोऽस्तु हेमाम्बुजपीठिकायै
नमोऽस्तु भूमण्डलनायिकायै ।
नमोऽस्तु देवादिदयापरायै
नमोऽस्तु शार्ङ्गायुधवल्लभायै ॥

सरल अर्थ:
स्वर्ण कमल को अपना आसन बनाने वाली, पूरे संसार की स्वामिनी और देवताओं पर भी करुणा करने वाली माँ लक्ष्मी को प्रणाम है। भगवान विष्णु, जो शार्ङ्ग धनुष धारण करते हैं, उनकी प्रिय पत्नी को मेरा नमन है।

श्लोक 14

नमोऽस्तु देव्यै भृगुनन्दनायै
नमोऽस्तु विष्णोरुरसिस्थितायै ।
नमोऽस्तु लक्ष्म्यै कमलालयायै
नमोऽस्तु दामोदरवल्लभायै ॥

सरल अर्थ:
भृगु ऋषि की पुत्री माँ लक्ष्मी को प्रणाम है। जो भगवान विष्णु के हृदय में निवास करती हैं, कमल में विराजती हैं और भगवान दामोदर की प्रिय हैं, उन माँ लक्ष्मी को बार-बार प्रणाम है।

श्लोक 15

नमोऽस्तु कान्त्यै कमलेक्षणायै
नमोऽस्तु भूत्यै भुवनप्रसूत्यै ।
नमोऽस्तु देवादिभिरर्चितायै
नमोऽस्तु नन्दात्मजवल्लभायै ॥

सरल अर्थ:

प्रकाश और सुंदरता की देवी, कमल के समान नेत्रों वाली माँ लक्ष्मी को प्रणाम है। वे संसार की जननी और समृद्धि की शक्ति हैं तथा देवताओं द्वारा भी पूजित हैं। भगवान श्रीकृष्ण की प्रिय शक्ति को बार-बार नमन है।

श्लोक 16

सम्पत्करणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानविभवानि सरोरुहाक्षि ।
त्वद्वन्दनानि दुरिताहरणोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु मान्ये ॥

सरल अर्थ:

हे कमलनयनी माता! आपकी वंदना धन-संपत्ति, सुख और वैभव देने वाली मानी जाती है। आपके चरणों में की गई प्रार्थना दुख और बुराइयों को दूर करने वाली है। इसलिए हे माता, मैं निरंतर आपकी वंदना करता रहूँ और आपकी कृपा प्राप्त करूँ।

श्लोक 17

यत्कटाक्षसमुपासनाविधिः
सेवकस्य सकलार्थसम्पदः ।
सन्तनोति वचनाङ्गमानसै-
स्त्वां मुरारिहृदयेश्वरीं भजे ॥

सरल अर्थ:

हे भगवान विष्णु के हृदय में निवास करने वाली माँ लक्ष्मी! आपकी कृपादृष्टि की उपासना करने से भक्त के जीवन में अनेक प्रकार की संपत्तियाँ और शुभ फल प्राप्त होते हैं। मैं अपने **वचन, शरीर और मन** से आपकी भक्ति करता हूँ।

श्लोक 18

सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतमांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे
त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥

सरल अर्थ:

हे कमल में निवास करने वाली, हाथ में कमल धारण करने वाली और श्वेत वस्त्र एवं सुगंधित मालाओं से सुशोभित माँ लक्ष्मी! हे भगवान विष्णु की प्रिय देवी, आप तीनों लोकों में सुख और समृद्धि प्रदान करने वाली हैं। **आप मुझ पर प्रसन्न हों।**

श्लोक 19

दिग्घस्तिभिः कनककुम्भमुखावसृष्ट-
स्वर्वाहिनीविमलचारुजलप्लुताङ्गीम् ।
प्रातर्नमामि जगतां जननीमशेष-
लोकाधिनाथगृहिणीममृताब्धिपुत्रीम् ॥

सरल अर्थ:
मैं प्रातःकाल उस माँ लक्ष्मी को प्रणाम करता हूँ जिनका दिव्य अभिषेक हाथियों द्वारा स्वर्ण कलशों से बहाए गए पवित्र जल से किया जाता है। वे संसार की माता और समस्त लोकों के स्वामी भगवान विष्णु की पत्नी हैं। वे क्षीरसागर की पुत्री हैं और **संपूर्ण जगत के कल्याण का आधार** मानी जाती हैं।

श्लोक 20

कमले कमलाक्षवल्लभे त्वं
करुणापूरतरङ्गितैरपाङ्गैः ।
अवलोकय मामकिञ्चनानां
प्रथमं पात्रमकृत्रिमं दयायाः ॥

सरल अर्थ:
हे कमलवासिनी माँ लक्ष्मी, हे कमलनयन भगवान विष्णु की प्रिय पत्नी! अपनी करुणा से भरी हुई दृष्टि से मेरी ओर देखिए। मैं स्वयं को आपकी दया का पात्र मानकर आपकी शरण में आया हूँ। मुझ पर भी आपकी **सच्ची कृपा** हो।

श्लोक 21

बिल्वाटवीमध्यलसत्सरोजे
सहस्रपत्रे सुखसन्निविष्टाम् ।
अष्टापदाम्भोरुहपाणिपद्मां
सुवर्णवर्णां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

सरल अर्थ:
मैं उस माँ लक्ष्मी को प्रणाम करता हूँ जो बिल्व वृक्षों के वन में खिले हुए हजार पंखुड़ियों वाले कमल पर विराजमान हैं। उनके हाथ कमल के समान सुंदर हैं और उनका दिव्य स्वरूप स्वर्ण के समान चमकीला है। वे **ऐश्वर्य और समृद्धि की देवी** हैं।

श्लोक 22

कमलासनपाणिना ललाटे
लिखितामक्षरपङ्क्तिमस्य जन्तोः ।
परिमार्जय मातरङ्घ्रिणा ते
धनिकद्वारनिवासदुःखदोग्ध्रीम् ॥

सरल अर्थ:

हे माता! यदि किसी व्यक्ति के भाग्य में गरीबी, अभाव या आर्थिक कठिनाइयाँ लिखी हों, तो अपनी कृपा से उन कठिन परिस्थितियों को दूर कर दीजिए। उसके जीवन से ऐसी विपत्तियों को मिटाइए जो उसे दूसरों के सामने आर्थिक कष्ट में डालती हैं। यह श्लोक **भाग्य से अधिक देवी की करुणा और परिवर्तन की प्रार्थना** करता है।

श्लोक 23

अम्भोरुहं जन्मगृहं भवत्याः
वक्षःस्थलं भर्तृगृहं मुरारेः ।
कारुण्यतः कल्पय पद्मवासे
लीलागृहं मे हृदयारविन्दम् ॥

सरल अर्थ:

हे कमल में निवास करने वाली माँ लक्ष्मी! कमल आपका जन्मस्थान है और भगवान विष्णु का हृदय आपका गृह है। कृपा करके मेरे हृदय के कमल को भी अपना निवास बना लें। अर्थात मेरे मन में **पवित्रता, सद्भाव, संतोष और लक्ष्मी का मंगलकारी भाव** हमेशा बना रहे।

श्लोक 24

स्तुवन्ति ये स्तुतिभिरमूभिरन्वहं
त्रयीमयीं त्रिभुवनमातरं रमाम् ।
गुणाधिका गुरुतरभाग्यभाजिनो
भवन्ति ते भुवि बुधभाविताशयाः ॥

सरल अर्थ:

जो लोग प्रतिदिन इन स्तुतियों के माध्यम से तीनों लोकों की माता माँ लक्ष्मी की आराधना करते हैं, वे अच्छे गुणों से संपन्न और सौभाग्यशाली बनते हैं। उनके मन में शुभ विचार विकसित होते हैं और वे समाज में सम्मान पाने वाले बनते हैं। यहां पाठ का महत्व केवल धन में नहीं, बल्कि **गुण, सद्बुद्धि और सौभाग्य** में भी बताया गया है।

श्लोक 25 — फलश्रुति

सुवर्णधारास्तोत्रं यच्छङ्कराचार्य निर्मितम् ।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स कुबेरसमो भवेत् ॥

सरल अर्थ:

यह सुवर्णधारा स्तोत्र आदि शंकराचार्य द्वारा रचित माना जाता है। जो व्यक्ति इसका नियमित रूप से **तीनों संध्याओं—प्रातः, मध्यान्ह और सायंकाल** में पाठ करता है, वह कुबेर के समान समृद्ध होने का फल प्राप्त करता है—ऐसी पारंपरिक मान्यता इस फलश्रुति में व्यक्त की गई है।

कनकधारा स्तोत्र का सार

पूरे 25-श्लोक वाले संस्करण को बहुत सरल भाषा में समझें तो इसमें भक्त माँ लक्ष्मी से केवल **पैसा** नहीं मांगता। वह देवी से कहता है—माता, आपकी कृपा मेरे जीवन में आए, मेरे दुख और अभाव दूर हों, मेरे घर में सुख-शांति और समृद्धि आए, मेरे मन में अच्छे विचार रहें और मेरा हृदय भी आपकी कृपा का निवास बने।

सबसे सुंदर बात यह है कि अंतिम अतिरिक्त श्लोकों में भी केवल बाहरी धन की बात नहीं है। कहीं देवी की करुणा मांगी गई है, कहीं हृदय में उनके निवास की प्रार्थना है और कहीं अच्छे गुणों तथा सौभाग्य की बात आती है। इसलिए **कनकधारा स्तोत्र को केवल धन प्राप्ति का पाठ मानना इसके व्यापक भाव को छोटा कर देता है।**

25 श्लोक वाले संस्करण की विशेषता

विश्वसनीय पाठ-संकलनों में **18, 21 और 25 श्लोक वाले अलग-अलग पाठ-प्रचलन** दर्ज हैं। 25-श्लोक वाले संस्करण में तीन अतिरिक्त “नमोऽस्तु” श्लोक, तीन अतिरिक्त श्लोक—**बिल्वाटवी, कमलासन और अम्भोरुह** से शुरू होने वाले—और अंत में फलश्रुति शामिल है।